# कबीर की कविताओं में सामाजिक चेतना का अध्ययन

**Leela Devi***

Assistant Professor, Hindi Department, Janata Kanya Postgraduate College, Aalanabad-Sirsa, Haryana

***सार -** संत कबीर निर्गुण मत के अनुयायी कवि है। भक्ति काल में निर्गुण भक्तों में कबीर को सर्वोच्च स्थान दिया गया है। भारतभूमि जो अनेक रत्नों की खान रही है उन्हीं महान् रत्नों में से एक थे संत कबीर। कबीर का अरबी भाषा में अर्थ है - महान्। वे भक्त और कवि बाद में थे, पहले समाज सुधारक थे। वे सिकन्दर लोदी के समकालीन थे। कबीर की भाषा सधुक्कड़ी थी तथा उसी भाषा में कबीर ने समाज में व्याप्त अनेक रूढ़ियों का खुलकर विरोध किया है। हिन्दी साहित्य में कबीर के योगदान को नकारा नहीं जा सकता। रामचन्द्र शुक्ल ने भी उनकी प्रतिभा मानते हुए लिखा है "प्रतिभा उनमें बड़ी प्रखर थी।"*

---------------------------------X---------------------------------

## प्राक्कथन

संसार रुपी सागर अनेक रत्नों से भरा हुआ है। भारत की भूमि तो रत्नों की खान ही रही है। उन्ही महान रत्नो में से एक थे संत कबीर जी। वे भक्त व कवि बाद में थे, पहले समाजसुधारक थे। महान कवि व समाजसुधारक महात्मा कबीर का जन्म जेठ सुदी पूर्णिमा, सोमवार विक्रम संवत् 1455 माना जाता है। किंवदंती के अनुसार महात्मा कबीर ने किसी विधवा ब्राह्मणी की कोख से जन्म लिया था। जो लोकलाज के भय से इन्हे लहरतारा तालाब में फेंक गई, वहां नीरु व नीमा नामक जुलाहा दंपती इन्हें उठा लाए और इनका पालन-पोषण किया।बाद में इन्हें ही कबीर का माता-पिता माना गया। कबीर के जन्म के संबध में एक दोहा काफी प्रचलित हैः-

चैदह सौ पचपन साल गयें, चंद्रवार एक ठाठ ठए

जेठ सुदी बरसायत को, पूरनमासी तिथि प्रगट भये

घन गरजे दामिनि दमके, बूँदे बरसे झर लाग लए

लहर तालाब में कमल खिले, तहँ कबीर भानु प्रगट भए।।

नीरु व नीमा ने इनका नामकरण 'कबीर' किया जिसका अर्थ होता है- 'महान' कबीर ने अपने महान कार्यो से अपने नाम को सार्थक किया कबीर ग्रहस्थ थे। इनका विवाह 'लोई' नामक युवती से हुआ था। जिससे इन्हे कमाल और कमाली नामक पुत्र तथा पुत्री हुई। कबीर लोदी वंश के शासक सिकन्दर लोदी के समकालीन थे। कबीर भक्तिकाल की संत काव्यधारा के श्रेष्ट और प्रतिष्ठित संत कवि है। महान विद्वान् रामानन्द को ही कबीर का गुरु माना जाता है। इसके साथ वे सूफी सन्त शेखतक़ी के सम्पर्क में आने के कारण वे सूफी धर्म और विचारों से भी प्रभावित हुए। कबीर की वाणी का संग्रह 'बीजक' कहलाता है। इनके तीन भाग हैः- साखी, शब्द और रमैनी। कबीर की कविता गहरे जीवनानुभवो की कविता है। उन्होने 'कागद लेखी' पर कम 'आँखिन देखी' पर ज्यादा भरोसा किया है।

कबीर की जन्म तिथि की तरह मृत्यु तिथि भी अनिश्चित है। मृत्यु के सम्बन्ध में एक दोहा प्रसिद्ध हैः-

संवत पन्द्रह सौ पचहत्तर कियो मगहर को गोन।

माघ सुदी एकदशी रलो पौन में पौन।।

इस दोहे से स्पष्ट होता है कि उनकी मृत्यु संवत् 1575 में हुई कबीरदास जी की आयु लगभग 120 वर्ष मानी गई है। अनेक प्रमाणों के आधार पर इनका जन्म स्थान 'काशी' माना जाता है और मृत्यु बनारस के समीप 'मगहर' नामक स्थान पर मानी जाती है। कबीर जी न हिन्दू थे और न ही मुसलमान, वे तो जाति व धर्म से ऊपर थे। वे भक्त और कवि बाद में थे, पहले समाजसुधारक थे।

प्रस्तुत शोध पत्र में कबीर के समाज सुधार रुप के सम्बन्ध की जानकारी प्रदान करने की कोशिश की गई। कबीर का युग सामाजिक विषमताओं का युग था। उन्होने अपनी वाणी द्वारा समाज में फैली बुराईयों को दूर करने का प्रयास किया रामचन्द्र शुक्ल ने भी उनकी प्रतिभा मानते हुए लिखा हैः-

" प्रतिभा उनमें बड़ी प्रखर थी"

## कबीर की सामाजिक चेतना

कबीर का युग सामाजिक विषमताओं का युग था। वे अपने युग में जाति, धर्म, ऊँच-नीच, धन आदि को लेकर समाज की सारी विषमताओं को समाप्त कर देना चाहते थे। कबीर स्वच्छंद विचारक थे। वे मानवतावादी आस्था के साथ समाज में सुधार लाना चाहते थे अतः उन्होने जहां कही भी प्रगति को रोकने वाली रुढियां देखी उनका डटकर विरोध किया। वास्तव में कबीर ने एक ऐसे सामाज की कल्पना की जिसमें न तो कोई ब्रहमण है और ना ही शुद्र, न ही उँचा है और ना ही नीचा, न ही अमीर है और न ही गरीब सभी लोग उस एक निर्गुण निराकार परमात्मा की संतान है।

लोका जानि न भूलौ भाई।

खालिक खलक खलक में खालिक, सब घट रह्यौ समाई।

अला एकै नूर उपनाया, ताकि कैसी निंदा।

ता नूर थै सब जंग कीया कौन भला कौन मंदा।

ता अला की गति नहीं जांनि गुरि गुड़ दीया मीठा।

कहै कबीर मैं पूरा पाया, सब घटि साहिब दीठा।।

कबीर जी अपनी ऐसी ही मान्यताओं तथा स्थापनाओ के कारण मानवतावादी चेतना शिखर पर प्रतिष्ठित दिखाई पड़ते है। कबीर अपने युग से पूर्ण परिचित थे जाति-पाति के भीषण परिणामों का वे अपनी आँखो से देख चुके थे। उन्होने जाति के बन्धनों का खुलकर विरोध किया और सबको एक ईश्वर की संतान बताया।

"जाति-पाति पूछै नहि कोई।

हरि को भजे सो हरि को होई।"

अनुभुति की सच्चाई और अभिव्यक्ति की ईमानदारी की सबसे बड़ी विशेषता है। उन्होने जन्म के आधार पर ऊँच-नीच की भावना पर प्रहार करते हुए कहा कि जन्म के आधार पर कोई छोटा या बड़ा नहीं होता, ऊँचा या बड़ा वह है जिसके कार्य अच्छे है।

ऊँचे कुल का जनमिया करनी ऊँच न होय।

सुरबन कलस सुरा भरा साधू निंदत सोय।।

कबीर ने समाज मे व्याप्त मूर्ति पूजा का भी डटकर विरोध किया है।वे सामान्य जनता को समझाते हुए कहते है कि मूर्ति पूजा से भगवान नहीं मिलते, इससे तो अच्छा है कि घर की चाकी को पूजा जाए जिससे हम अनाज पीसकर खाते हैः-

पाहन पूजे हरि मिलै, तो मैं पूजुं पहार।

तासे या चाकी भली, पीस खाये संसार।।

कबीर एक ऐसे सन्त थे जिन्होने दिव्य ज्ञान के माध्यम से यह निष्कर्ष निकाला था कि कोरा ज्ञान व्यर्थ है। वह ज्ञान काम का है जो हरि भक्ति और मिलजुल कर रहने की प्रेरणा देता है।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दो में-

"कबीर की वाणी वह लता है जो भोग के क्षेत्र में भक्ति का बीज पड़ने से अंकुरित हुई थी"

डॉ. द्वारिका प्रसाद सक्सेना का मत है कि:-

"कबीर सच्चे समाज सुधारक थे जिन्होन दोनो धर्मो हिन्दू-मुस्लिम की भलाई बुराई देखी एवं परखी और केवल कटु आलोचना ही नहीं की अपितु दोनो धर्मावलम्बियों को मार्ग दिखलाया। जिस पर चलकर मानव मात्र ही नहीं समस्त प्राणी जगत का कल्याण हो सकता है।

कबीर दास जी ने विभिन्न प्रकार के छापा-तिलक व मालाओं को धारण करके ईश्वर को प्राप्त करने का दावा करने वाले लोगों का विरोध किया है। वे कहते है कि माला फेरने से ईश्वर प्राप्त नहीं होता वह तो मन की शुद्धि से होता हैः-

"माला फेरत जुग गया, गया ना मन का फेर।

कर का मनका डारि कै मन का मनका फेर।।"

कबीर एक समाज सुधारक सत्य और धर्म के प्रतिपादक समन्वयवादी तथा क्रान्तिदर्शी थे। वे समाज में प्रत्येक प्रकार की असमानता, आडम्बर और ढ़ोंग को समाप्त कर देना चाहते थे। यह काम स्पष्टवक्ता, दृढ़ विवेक और निर्भीक व्यक्ति ही कर सकता है। कबीर को किसी का भय नहीं था वे तो घर फूँक कर तमाशा देखने वाले में से थे।

कबिरा खड़ा बाजार में लिए लुकाटी हाथ।

जो घर फूँके आपणो चलै हमारे साथ।

www.ignited.in

## उदेश्य:-

प्रस्तुत शोध पत्र के माध्यम से मानव जीवन में कबीर की वाणी के महत्व पर प्रकाश डालना है। उन्होन अपनी प्रखर भाषा के माध्यम से समाज में फैली बुराईयों को दूर किया तथा विभिन्न क्षेत्रों में समाज सुधार का स्तुत्य प्रयास किया।

**हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दो में:-**

"भाषा पर कबीर का जबरदस्त अधिकार था। वे वाणी डिक्टेटर थे। जिस बात उन्होने जिस रुप में प्रकट करना चाहा है उसे उसी रुप में भाषा से कहलवा लिया बन गया है, तो सीधे-सीधे नही तो दरेरा देकर। भाषा कुछ कबीर के सामने लाचार सी नजर आती है। उसमे मानो ऐसी हिम्मत ही नहीं है कि इस लापरवाह फक्कड़ की किसी फरमाईश को नाही कर सके।"

## निष्कर्ष:-

सार रुप में कहा जा सकता है कि कबीर समाज सुधारक है, समन्वयकारी है, मानवतावादी है तथा निर्गुण निराकार अकथ-अविगत परमात्मा के स्वरुप का वर्णन और गायन करने वाले सन्त कवि है। उन्होने वास्तविक सत्य को समझ लिया था। इसलिए वे उस सत्य के विपरीत आचरण करने वाले को फटकार कर सीधे रास्ते पर लाना चाहते थे। कबीर हठयोग साधना, वैष्णवमत इस्लाम तथा अपने समय में अनेक प्रकार की साधनाओं से परिचित थे। उनकी सामाजिक चेतना उनकी परमार्थ चेतना में घुली हुई है। वे भारतीय समाज और हिन्दी साहित्य की अप्रतिम-अनूठी निधि है।

**डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी के शब्दो में:-**

"वह सिर से पैर तक मस्तमौला, स्वभाव से फक्कड़, आदत से अक्खड़ भक्त के सामने निरीह, भेषधारी के आगे प्रचण्ड, दिल से साफ दिमाग से दुरुस्त भीतर से कोमल, बाहर से कठोर जन्म से अस्पृश्य एवं कर्म से वंदनीय थे।"

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची:-**

1. कबीर वचनामृत - सं. डॉ. विजयेन्द्र स्नातक, नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली।
2. रामचन्द्र शुक्ल - हिन्दी साहित्य का इतिहास, कमल प्रकाशन
3. कबीर ग्रंथावली - संपादन – डॉ. श्याम सुन्दर दास, लोकभारती प्रकाशन।
4. कबीर ग्रंथावली - माता प्रसाद गुप्ता।
5. कबीर वाणी संग्रह – डॉ. पारस नाथ तिवारी।
6. मध्यकालीन काव्य कुंज - सं. डॉ. रामसजन पाण्डेय, खाटू श्याम प्रकाशन
7. 'कबीर' हजारी प्रसाद द्विवेदी - राजकमल प्रकाशन।
8. कबीर एक अनुशीलन – डॉ. राम कुमार वर्मा।

---

**Corresponding Author**

**Leela Devi***

Assistant Professor, Hindi Department, Janata Kanya Postgraduate College, Aalanabad-Sirsa, Haryana

# Topic Name

**Student Name***

Designation

***Abstract –***

- - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - X - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - - -

## INTRODUCTION

Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text

Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text

Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text

Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text

Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text

Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text

Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text

Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text

Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text

Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text

Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text

Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text

Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text

Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text

Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text

Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text Text

**Corresponding Author**

**Student Name***

Designation